पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.07.2016 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

परिषद् की अंतरग सभा की बैठक 28 अगस्त को

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली की "वार्षिक अन्तरंग सभा" की बैठक रविवार, 28 अगस्त 2016 को सायं 3.00 बजे राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य की अध्यक्षता में आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली में होगी। जिसमें गत् वर्ष का लेखा जोखा, वार्षिक रिपोर्ट व बजट स्वीकृत किया जायेगा। कृपया सभी सभासद् समय पर पहुंचे।

—महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामन्त्री,
फोनः 09013137070, 22328595.

वर्ष-33 अंक-4 श्रावण-2073 दयानन्दाब्द 192 16 जुलाई से 31 जुलाई 2016 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.07.2016, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने 115 वां डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जन्मोत्सव मनाया

धारा 370 समाप्त करना ही डा. मुखर्जी को सच्ची श्रद्धाजंलि-डा. अनिल आर्य

जहां हुए बलिदान मुखर्जी वो कश्मीर हमारा है, जो कश्मीर हमारा है, वह सारे का सारा है''

राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के नेतृत्व में नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ता प्रदर्शन करते हुए, साथ में शिशुपाल आर्य, रामकुमार सिंह, धर्मपाल आर्य, अरूण आर्य, दिनेश आर्य, महावीरसिंह आर्य, सुदेश भगत, अरविन्द मिश्रा, श्यामपाल शास्त्री, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), राकेश आर्य आदि।

बुधवार, 6 जुलाई 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में प्रखर राष्ट्रवादी चिन्तक, भारतीय जनसंघ के संस्थापक डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का 115 वां जन्मोत्सव नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर "राष्ट्र रक्षा यज्ञ" करके मनाया गया। आचार्य श्यामपाल शास्त्री ने यज्ञ करवाया। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि समय की मांग है कि जम्मू कश्मीर से धारा 370 अविलम्ब समाप्त की जाये तथा पूरे देश में सभी के लिये समान रूप से एक समान आचार संहिता लागू की जाये। आर्य युवक नारे लगा रहे थे– जहां हुए बलिदान मुखर्जी वो कश्मीर हमारा है, जो कश्मीर हमारा है, वह सारे का सारा है"। पाक अधिकृत कश्मीर वापिस लो–वापिस लो। एक देश मे दो विधान, एक देश में दो संविधान, एक देश में दो प्रधान, नहीं चलेगे–नहीं चलेगे। सभी ने सेना को खुली छूट देने की मांग की, डा. मुखर्जी का जीवन चरित्र पाठय पुस्तकों में पढ़ाने व उनके नाम से कोई नयी परियोजना चलाने की मांग की गई। डा. आर्य ने पाकिस्तान को कठोरता से जवाब देने के लिये मांग की, इस सन्दर्भ में प्रधानमन्त्री को ज्ञापन दिया गया। आर्य नेता रविन्द्र मेहता, महावीर सिंह आर्य, विजय सब्रवाल, रामकुमार सिंह आर्य, अरूण आर्य, अरविन्द मिश्रा, दिनेश आर्य, शिवम मिश्रा, राकेश आर्य, अमित आर्य, प्रवीन आर्य, बलजीत आदित्य, धर्मपाल आर्य, शिशुपाल आर्य, सुदेश भगत, राहुल आर्य, केशव आर्य प्रमुख रूप से सम्मलित हुए।

जन्तर मन्तर पर "राष्ट्र रक्षा यज्ञ" करते हुए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के जुझारू कार्यकर्ता

दिल्ली चलो आर्यो — दिल्ली पंहुचो आर्य युवको

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 38वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में

"राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन"

रविवार, 4 सितम्बर 2016, प्रातः 9.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक

स्थानः योग निकेतन सभागार, रोड न. 78, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली–110026

देश भर के आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम, 1000 आर्य युवाओं द्वारा सामुहिक यज्ञोपवीत संस्कार का सुन्दर दृश्य

सभी आर्य युवक पूर्ण वेशभूषा में दल बल सहित पंहुचने का कार्यकम बना लें, दिल्ली से बाहर से पधारने वाले साथी कृपया अपनी संख्या के बारे में शीघ्र सूचित करें जिससे आवास आदि का यथोचित प्रबन्ध किया जा सके ।

भवदीय

डा.अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	सौरभ गुप्ता–अरूण आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	व्यवस्थापक

धर्म और मजहब में अंतर क्या है?

– डॉ. विवेक आर्य

एन.डी.टी.वी. के कार्यक्रम हमलोग में जाकिर नाईक पर चर्चा में मुंबई पुलिस के पूर्व कमिश्नर डॉ सत्यपाल सिंह जी वक्ता के रूप में शामिल हुए। अपने विचार रखते हुए डॉ सत्यपाल सिंह जी ने एंकर से युवाओं के आतंकवादी बनने से बचने के लिए धर्म को अपनाने एवं मजहब के बहिष्कार करने का पक्ष रखा। एंकर नगमा सहर को धर्म एवं मजहब में अंतर नहीं मालूम था। इसलिए नगमा ने उसे स्वीकार नहीं किया। डॉ सत्यपाल सिंह जी ने जो बात उनके सामने रखी वह बहुत महत्वपूर्ण है। क्यूंकि अगर आज विश्व धर्म और मजहब में अंतर समझ जाये तो सम्पूर्ण विश्व से आतंकवाद का सफाया हो जाये। पाठकों के लिए धर्म और मजहब में अंतर को इस लेख द्वारा स्पष्ट किया गया हैं।

धर्म संस्कृत भाषा का शब्द हैं जो कि धारण करने वाली धृ धातु से बना है। जो धारण किया जाये वह धर्म है। अथवा लोक परलोक के सुखों की सिद्धि के हेतु सार्वजनिक पवित्र गुणों और कर्मों का धारण व सेवन करना धर्म है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं की मनुष्य जीवन को उच्च व पवित्र बनाने वाली ज्ञानानुकुल जो शुद्ध सार्वजनिक मर्यादा पद्यति है वह धर्म है।

धर्म और मजहब में अंतर क्या हैं?

प्रायः अपने आपको प्रगतिशील कहने वाले लोग धर्म और मजहब को एक ही समझते हैं।

मजहब अथवा मत–मतान्तर अथवा पंथ के अनेक अर्थ हैं जैसे वह रास्ता जी स्वर्ग और ईश्वर प्राप्ति का हैं और जोकि मजहब के प्रवर्तक ने बताया हैं। अनेक जगहों पर ईमान अर्थात विश्वास के अर्थों में भी आता हैं।

1. धर्म और मजहब समान अर्थ नहीं है और न ही धर्म ईमान या विश्वास का प्रायः है।

2. धर्म क्रियात्मक वस्तु हैं मजहब विश्वासात्मक वस्तु है।

3. धर्म मनुष्य के स्वभाव के अनुकूल अथवा मानवी प्रकृति का होने के कारण स्वाभाविक है और उसका आधार ईश्वरीय अथवा सृष्टि नियम है। परन्तु मजहब मनुष्य कृत होने से अप्राकृतिक अथवा अस्वाभाविक हैं। मजहबों का अनेक व भिन्न भिन्न होना तथा परस्पर विरोधी होना उनके मनुष्य कृत अथवा बनावटी होने का प्रमाण है।

4. धर्म के जो लक्षण मनु महाराज ने बतलाये हैं वह सभी मानव जाति के लिए एक समान है और कोई भी सभ्य मनुष्य उसका विरोधी नहीं हो सकता। मजहब अनेक हैं और केवल उसी मजहब को मानने वालों द्वारा ही स्वीकार होते है। इसलिए वह सार्वजानिक और सार्वभौमिक नहीं है। कुछ बातें सभी मजहबों में धर्म के अंश के रूप में है इसलिए उन मजहबों का कुछ मान बना हुआ है।

5. धर्म सदाचार रूप हैं अतः धर्मात्मा होने के लिये सदाचारी होना अनिवार्य है। परन्तु मजहबी अथवा पंथी होने के लिए सदाचारी होना अनिवार्य नहीं है। अर्थात जिस तरह तरह धर्म के साथ सदाचार का नित्य सम्बन्ध है उस तरह मजहब के साथ सदाचार का कोई सम्बन्ध नहीं है। क्यूंकि किसी भी मजहब का अनुनायी न होने पर भी कोई भी व्यक्ति धर्मात्मा (सदाचारी) बन सकता है।

परन्तु आचार सम्पन्न होने पर भी कोई भी मनुष्य उस वक्त तक मजहबी अथवा पन्थाई नहीं बन सकता जब तक उस मजहब के मंतव्यों पर ईमान अथवा विश्वास नहीं लाता। जैसे की कोई कितना ही सच्चा ईश्वर उपासक और उच्च कोटि का सदाचारी क्यूँ न हो वह जब तक हजरात ईसा और बाइबिल अथवा हजरत मोहम्मद और कुरान शरीफ पर ईमान नहीं लाता तब तक ईसाई अथवा मुस्लमान नहीं बन सकता।

6. धर्म ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है अथवा धर्म अर्थात धार्मिक गुणों और कर्मों के धारण करने से ही मनुष्य मनुष्यत्व को प्राप्त करके मनुष्य कहलाने का अधिकारी बनता है। दूसरे शब्दों में धर्म और मनुष्यत्व पर्याय है। क्यूंकि धर्म को धारण करना ही मनुष्यत्व है। कहा भी गया है–

खाना, पीना, सोना, संतान उत्पन्न करना जैसे कर्म मनुष्यों और पशुओं के एक समान हैं। केवल धर्म ही मनुष्यों में विशेष हैं जोकि मनुष्य को मनुष्य बनाता हैं। धर्म से हीन मनुष्य पशु के समान हैं। परन्तु मजहब मनुष्य को केवल पन्थाई या मजहबी और अन्धविश्वासी बनाता हैं। दूसरे शब्दों में मजहब अथवा पंथ पर ईमान लाने से मनुष्य उस मजहब का अनुयायी अथवा ईसाई अथवा मुस्लमान बनता हैं नाकि सदाचारी या धर्मात्मा बनता हैं।

7. धर्म मनुष्य को ईश्वर से सीधा सम्बन्ध जोड़ता है और मोक्ष प्राप्ति निमित धर्मात्मा अथवा सदाचारी बनना अनिवार्य बतलाता है परन्तु मजहब मुक्ति के लिए व्यक्ति को पन्थाई अथवा मजहबी बनना अनिवार्य बतलाता हैं। और मुक्ति के लिए सदाचार से ज्यादा आवश्यक उस मजहब की मान्यताओं का पालन बतलाता है।

जैसे अल्लाह और मुहम्मद साहिब को उनके अंतिम पैगम्बर मानने वाले जन्नत जायेगे चाहे वे कितने भी व्यभिचारी अथवा पापी हो जबकि गैर मुसलमान चाहे कितना भी धर्मात्मा अथवा सदाचारी क्यूँ न हो वह दोजख अर्थात नर्क की आग में अवश्य जलेगा क्यूंकि वह कुरान के ईश्वर अल्लाह और रसूल पर अपना विश्वास नहीं लाया है।

8. धर्म में बाहर के चिन्हों का कोई स्थान नहीं है क्यूंकि धर्म लिंगात्मक नहीं हैं –न लिंगम धर्मकारणं

अर्थात लिंग (बाहरी चिन्ह) धर्म का कारण नहीं है।

परन्तु मजहब के लिए बाहरी चिन्हों का रखना अनिवार्य हैं जैसे एक मुस्लमान के लिए जालीदार टोपी और दाड़ी रखना अनिवार्य है।

9. धर्म मनुष्य को पुरुषार्थी बनाता है क्यूंकि वह ज्ञानपूर्वक सत्य आचरण से ही अभ्युदय और मोक्ष प्राप्ति की शिक्षा देता है परन्तु मजहब मनुष्य को आलस्य का पाठ सिखाता है क्यूंकि मजहब के मंतव्यों मात्र को मानने भर से ही मुक्ति का होना उसमें सिखाया जाता है।

10. धर्म मनुष्य को ईश्वर से सीधा सम्बन्ध जोड़कर मनुष्य को स्वतंत्र और आत्म स्वालंबी बनाता हैं क्यूंकि वह ईश्वर और मनुष्य के बीच में किसी भी मध्यस्थ या एजेंट की आवश्यकता नहीं बताता। परन्तु मजहब मनुष्य को परतंत्र और दूसरों पर आश्रित बनाता हैं क्यूंकि वह मजहब के प्रवर्तक की सिफारिश के बिना मुक्ति का मिलना नहीं मानता।

11. धर्म दूसरों के हितों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक देना सिखाता है जबकि मजहब अपने हित के लिए अन्य मनुष्यों और पशुओं की प्राण हरने के लिए हिंसा रुपी कुरबानी का सन्देश देता है।

12. धर्म मनुष्य को सभी प्राणी मात्र से प्रेम करना सिखाता है, जबकि मजहब मनुष्य को प्राणियों का माँसाहार और दूसरे मजहब वालों से द्वेष सिखाता है।

13. धर्म मनुष्य जाति को मनुष्यत्व के नाते से एक प्रकार के सार्वजानिक आचारों और विचारों द्वारा एक केंद्र पर केन्द्रित करके भेदभाव और विरोध को मिटाता हैं तथा एकता का पाठ पढ़ाता है। परन्तु मजहब अपने भिन्न भिन्न मंतव्यों और कर्तव्यों के कारण अपने पृथक पृथक जत्थे बनाकर भेदभाव और विरोध को बढ़ाते और एकता को मिटाते है।

14. धर्म एक मात्र ईश्वर की पूजा बतलाता है जबकि मजहब ईश्वर से भिन्न मत प्रवर्तक, गुरु, मनुष्य आदि की पूजा बतलाकर अन्धविश्वास फैलाते है।

धर्म और मजहब के अंतर को ठीक प्रकार से समझ लेने पर मनुष्य अपने चिंतन मनन से आसानी से यह स्वीकार करके के श्रेष्ठ कल्याणकारी कार्यों को करने में पुरुषार्थ करना धर्म कहलाता हैं इसलिए उसके पालन में सभी का कल्याण हैं।

परिषद् का ''मिशन–25'' में 5000 युवाओं को यज्ञोपवीत दिये जायेगें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में युवा पीढ़ी को संस्कारित करने व महर्षि दयानन्द की विचारधारा से जोड़ने के लिये दिनांक 13 अगस्त से 21 अगस्त 2016 तक देश भर में ''युवा संस्कार अभियान'' चलाया जायेगा, जिसमें ''मिशन–25'' के अन्तर्गत 12 से 25 वर्ष तक के 5000 युवाओं को ''यज्ञोपवीत'' पहनाये जायेगे। सभी केन्द्रीय, प्रान्तीय, मण्डल, शाखा अध्यक्ष, शिक्षक अपने क्षेत्र की तैयारी प्रारम्भ कर देवें व अपनी रिपोर्ट केन्द्रीय कार्यालय को शीघ्र भिजवायें।

– डा.अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पर्क:9810117464, 9868002130, 9868051444, 27653604, 27653539

Email: aryayouth@gmail.com, aryayouthn@gmail.com, yuva.udghosh1982@gmail.com पर अविलम्ब सूचित करें। कृपया फोन व्यस्त मिलने पर एस.एम.एस या ईमेल कर दें।

भारत की वर्तमान अर्थव्यवस्था का सच

—अवधेश कुमार

भारत की अर्थव्यवस्था को लेकर नरेन्द्र मोदी सरकार जब यह कहती है कि हम दुनिया की सबसे तेज बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था हैं तो विरोधी कई आंकड़ों से उसे काटने की कोशिश करते हैं। कुछ अर्थशास्त्री भी इस पर प्रश्न उठा देते हैं। कुल मिलाकर इस समय देश में भारत की अर्थव्यवस्था को लेकर दो पक्ष है। एक पक्ष वाकई यह मानता है कि मोदी सरकार ने विरासत में मिली लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को संभाला है और यह इस समय दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं में सुस्ती के बावजूद गतिशीलता की पटरी पर है। नरेन्द्र मोदी तो अपने ज्यादातर भाषणों में यह चर्चा करते ही है कि भारत को हमने दुनिया की सबसे तीव्र गति से विकास करने वाली अर्थव्यवस्था बना दिया है और इसकी चारों ओर प्रशंसा हो रही है। तो सच क्या है? क्या सरकार केवल दावा करती है और सच कुछ दूसरा है? या उसके दावे में सच्चाई है?

कुछ समय पहले अमेरिका में भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर रघुराम राजन ने यह कह दिया था कि हम अंधों में काना राजा जैसे हैं। यानी जब दुनिया की अर्थव्यवस्था संघर्ष कर रही है, तेज विकास के सारे यत्न विफल हो रहे हैं उसमें भारत की सामान्य विकास दर सबसे तेज बन गई है। इसकी व्याख्या हम अपने तरीके से कर सकते हैं। किंतु इसमें भी यह सच्चाई तो है कि भारत की अर्थव्यवस्था वाकई वर्तमान दुनिया में सबसे तेज गति से दौड़ लगा रही है। भले वह उतनी तेज न हो जितनी की होनी चाहिए, लेकिन है। हमारे सामने आंकड़ें भी इसे सत्यापित करने के लिए उपस्थित है। अब इसमें कोई दो राय नहीं कि देश की विकास दर 2015–16 में 7.6 प्रतिशत रही है। 2015–16 वर्ष की जो आखिरी तिमाही थी उसमें विकास दर 7.9 प्रतिशत रही। इसका अर्थ यह हुआ कि 2016–17 में विकास दर 2015–16 के मुकाबले ज्यादा तेज होगा। अंतिम तिमाही की तीव्रता का तो यही संकेत है। ध्यान रखिए कि वित्त वर्ष 2014–15 में विकास दर 7.2 प्रतिशत रही थी। तो यह सतत वृद्धि या तीव्र गति को दर्शाता है। 2015–16 की तीसरी तिमाही में विकास दर 7.2 प्रतिशत ही थी।

ध्यान रखिए यह आर्थिक गति अनुमान से ज्यादा है। वर्तमान विकास दर की वृद्वि में विनिर्माण, उर्जा और खनन क्षेत्र की सबसे बड़ी भूमिका रही। विनिर्माण क्षेत्र में विकास दर 9.3 प्रतिशत रही। हालांकि इसका अनुमान 9.5 प्रतिशत का लगाया गया था जिसे स्पर्श नहीं किया जा सका किंतु यदि संप्रग सरकार में विनिर्माण के पीछे भागने की दशा को देखें तो यह विकास दर वाकई संतुष्ट करता है। खनन क्षेत्र में विकास दर 7.4 प्रतिशत रही। यह अनुमान से ज्यादा है। खनन क्षेत्र का विकास दर 6.9 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था। विनिर्माण वाली बात समग्र औद्योगिक विकास के संदर्भ में भी कही जा सकती है जो वित्त वर्ष 2016 में 2.4 प्रतिशत रहा है। अप्रैल में देश के 8 प्रमुख उद्योगों (कोर इंडस्ट्री) में उत्पादन 8.5 प्रतिशत बढ़ा है। ध्यान रखिए मार्च में इसकी वृद्वि दर केवल 6.4 प्रतिशत रही थी। हम जानते हैं कि तमाम उद्योगों में प्रमुख उद्योगों की हिस्सेदारी करीब 38 प्रतिशत है। इसमें इस तरह की वृद्वि और बेहतर औद्योगिक विकास की निश्चयात्मक उम्मीद पैदा करती है। कृषि, फिशिंग सेक्टर में 1.2 प्रतिशत की विकास रही है।

दुनिया में सबसे तेजी से विकास करने वाले देश के रुप में चीन को माना जाता था। लेकिन भारत की विकास दर के इन आंकड़ों में चीन हमसे पिछड़ गया है और यह एक बड़ी उपलब्धि है। 2015–16 की चौथी तिमाही के दौरान चीन की विकास दर 6.7 प्रतिशत रही। यह पिछले 7 साल में सबसे कम विकास दर है। चीन की विकास दर कैलेंडर वर्ष 2015 की आखिरी तिमाही में भी 6.8 प्रतिशत ही दर्ज की गई थी, जो 2009 के बाद सबसे कम है। दुनिया भारत की तुलना चीन से ही करती है। दोनों देशों को दुनिया के विकास का ईंजन माना जाने लगा है। उसमें यदि हमने चीन से बेहतर प्रदर्शन किया है तो फिर सरकार के दावों को गलत साबित करना उचित नहीं है। इस समय तक ऐसी कोई नकारात्मक पहलू सामने नहीं है जिनके आधार पर हम यह कह सकें कि आगे विकास दर नीचे आ सकता है। इसके उलट आगे मांग भी बढ़ने की संभावना है। ऐसे में इस बात की गुंजाइश बढ़ रही है कि जल्द निजी क्षेत्र के कैपेक्स यानी बाजार पूंजीकरण में रिकवरी आएगी। दरअसल, तीसरी तिमाही से कृषि क्षेत्र का सकारात्मक असर पड़ेगा। लगातार दो साल सूखे के बाद इस बार अच्छे मॉनसून की भविष्यवाणी की बदौलत कृषि क्षेत्र अच्छा प्रदर्शन कर सकता है। निरंतर दो वर्ष तक सूखा पड़ने के कारण कृषि वृद्धि वित्त वर्ष 2015–16 में 1.2 प्रतिशत रही जबकि 2014–15 में कृषि उत्पाद 0.25 प्रतिशत घटा था। कृषि के अच्छा प्रदर्शन का मतलब है गांवों के लोगों की क्रय शक्ति में वृद्वि। उनकी जेब में धन आने का मतलब है बाजार मे उद्योग और सेवा, दोनों में मांग तेज होना। जब मांग तेज होगी तो फिर आर्थिक विकास की गति और तेज होगी।

विकास का असर देश की कुल अर्थव्यवस्था तथा प्रति व्यक्ति आय पर पड़ता है। तो यह देखें कि प्रति व्यक्ति आय में भारत की क्या स्थिति है? क्या इसमें बढ़ोत्तरी हुई है? वास्तव में जिस दौरान के आंकड़े हम दे रहे हैं उस दौरान वास्तविक प्रति व्यक्ति आय भी 6.2 प्रतिशत बढ़कर 77,435 रुपये हो गई। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा राष्ट्रीय आय पर जारी आंकड़े के अनुसार 2015–16 में देश का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 113.50 लाख करोड़ रुपये रहा, जो एक साल पहले यानी 2014–15 में 105.52 लाख करोड़ रुपये था। यानी कुल अर्थव्यवस्था में भी करीब 8 लाख करोड़ रुपए की बढ़ोत्तरी हुई है। अगर विकास ही नहीं होता तो यह बढ़ोत्तरी कहां से होती? प्रति व्यक्ति आय कहां से बढ़ता? भारतीय रिजर्व बैंक के संदर्भ मूल्य 67.20 रुपये प्रति डॉलर के मुताबिक, कुल अर्थव्यवस्था का मूल्य 1,690 अरब डॉलर है। जब सारे आंकड़े सरकार के दावों की पुष्टि ही कर रहे हैं तो फिर उस पर प्रश्न उठाने का कोई मतलब नहीं है। हमें उस पर विश्वास करना ही चाहिए।

फिक्की ने हाल में जो सर्वेक्षण प्रकाशित किया है उसके अनुसार 2016–17 में कृषि क्षेत्र की औसत विकास दर 2.8 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। इसके अनुसार यह न्यूनतम 1.6 प्रतिशत और अधिकतम 3.5 प्रतिशत रह सकती है। इस दौरान औद्योगिक विकास दर 7.1 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। सेवा क्षेत्र की विकास दर को 9.6 प्रतिशत रहने के अनुमान लगाए गए हैं। यह सर्वे अप्रैलध्मई 2016 के दौरान किया गया, जिसमें उद्योग, बैंकिंग और वित्तीय सेवा के अर्थशास्त्रियों को शामिल किया गया। इन्हें 2016–17 के साथ पहली तिमाही और बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही के प्रमुख मैक्रो–इकोनॉमिक वैरिएबल के लिए अनुमान जाहिर करने को कहा गया था। फिक्की के अलावा क्रेडिट सुइस ने भी भारतीय अर्थव्यवस्था पर रिपोर्ट जारी की है। स्विट्जरलैंड की इस प्रमुख वित्तीय कंपनी ने उम्मीद जताई है कि चालू वित्त वर्ष में भारत की आर्थिक विकास दर 7.8 प्रतिशत रहेगी। यह विकास दर भारत सरकार के अनुमान के आसपास ही है। सुइस का मानना है कि कृषि और निजी उपभोग में सुधार की संभावना के चलते ऐसा होगा। यानी लोगों की खरीद शक्ति बढ़ेगी और वो ज्यादा उपभोग करेंगे जिससे मांग बढ़ेगी और इसके साथ हर क्षेत्र का उत्पादन।

क्रेडिट सुइस इस प्रकार का अनुमान लगाने वाला अकेला नहीं है। ज्यादतर रेटिंग एजेंसियों और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का आकलन ऐसा ही है। हम यह तो नहीं कह सकते कि मोदी सरकार ने सारी संस्थाओं को प्रभावित कर लिया है ताकि वे भारत के बेहतर आर्थिक विकास दर की भविष्यवाणी कर सकें। सिंगापुर के पूर्व प्रधानमंत्री गोह चोक टोंग ने हाल के एक बयान में कहा है कि वैश्विक सुस्ती की चिंताओं के बीच भारत एक आशा की किरण है। गोह चोक टोंग का सम्मान दुनिया भर में है। उन्होंने कहा है कि भारत में अगले 10 साल तक वैश्विक अर्थव्यवस्था की गाड़ी को आगे खींचने की क्षमता मौजूद है। उनके अनुसार अर्थव्यवस्था की सुस्ती दूर करने में भारत इस समय उसी स्थिति में है जहां चीन 10 साल पहले था। तो दुनिया हमें इस समय चीन के स्थान पर मान रही है। इसमें नकारत्मकता खोजने की बजाय पूरे देश को एकजुट होकर विकास का हाथ बनने की कोशिश करनी चाहिए।

—ई–30, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110092,
दूर. :01122483408, 09811027208

डा. अनिल आर्य 24 जुलाई को उदयपुर रहेंगे

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के तत्वावधान में दिनांक 23 व 24 जुलाई 2016 को नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर, राजस्थान में ''आर्य सम्पादक सम्मेलन'' का आयोजन श्री अशोक आर्य के संयोजन में किया जा रहा है, जिसमें युवा उद्घोष के सम्पादक डा. अनिल आर्य रविवार, 24 जुलाई को सम्मेलन में सम्मिलित होंगे।

— देवेन्द्र भगत, प्रेस सचिव

रविवार 27 नवम्बर को बागपत चलो

प्रो .सुरेन्द्रपाल आर्य के 75 वें जन्मोत्सव पर ''राष्ट्रीय प्रेरणा पर्व'' हीरक– स्वर्ण जयन्ती समारोह रविवार, 27 नवम्ब्र 2016 को प्रातः 9 बजे से ग्राम– मवीकलां, बड़ौत, बागपत, उतर प्रदेश में विशाल स्तर पर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें प्रमुख प्रतिभाओं का भव्य सम्मान भी किया जायेगा। कृपया सभी आर्य जन उपरोक्त तिथियां नोट कर लें व भारी संख्या में पंहुचे। परिषद् के **राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य** भी पंहुचेगे।

— महावीर सिंह आर्य, फोनः 9313147244

आर्य मनीषी, सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा.सुन्दरलाल कथूरिया ''अमृत महोत्सव'' सोल्लास सम्पन्न

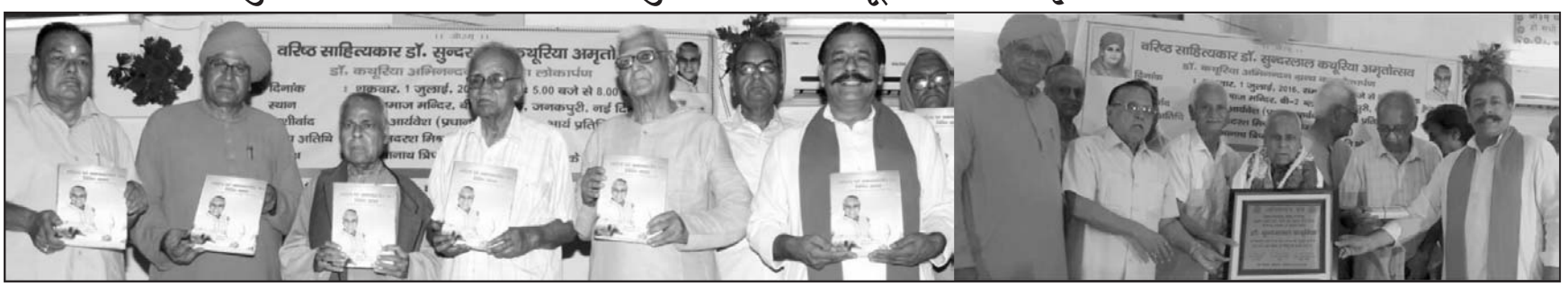

''साहित्य एवं समाज शास्त्रीय बोधः विविध आयाम'' का लोकापर्ण करते हुए बांये से डा.विजयप्रकाश त्रिपाठी, स्वामी आर्यवेश, डा.सुन्दरलाल कथूरिया, डा. रमानाथ त्रिपाठी,डा.रामदरस मिश्र व डा. अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में–डा. सुन्दरलाल कथूरिया जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए स्वामी आर्यवेश, श्री पृथ्वीराज साहनी, यशपाल आर्य, डा. अनिल आर्य आदि।

शुक्रवार, 1 जुलाई 2016, आर्य समाज के कर्मठ नेता, साहित्यकार, लेखक डा. सुन्दरलाल कथूरिया का ''अमृत महोत्सव'' आर्य समाज, बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली में सोल्लास सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि डा. कथूरिया का सम्मान पूरे आर्य जगत का सम्मान है। पूर्व महापौर श्री पृथ्वीराज साहनी ने कहा कि डा. कथूरिया निर्भीक व्यक्तित्व के धनी हैं, जिन्होंने कभी असत्य के साथ समझौता नही किया, जिन्होंने आपातकाल में भी सरकार से लोहा लिया– उन डा. कथूरिया जी को नमन करता हूँ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि डा. कथूरिया का सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही युवकों को प्रेरणा देने वाला है। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने यज्ञ करवाया। डा. मीना ठाकुर, पार्षद यशपाल आर्य, वेद प्रकाश, विक्रम नरूला, वीरेन्द्र सरदाना, अजय तनेजा, डा. शिवकुमार शास्त्री, राज मेहन, उमा मोंगा, ईशकुमार गक्खड़, प्रकाश आर्य, अशोक आर्य, भारतेन्द्र मासूम, अरूण आर्य, कृष्ण बवेजा, जगदीश गुलाटी, भोपालसिंह आर्य, दिनेश आर्य, चतरसिंह नागर, विजय गुप्त, प्रेमकांत बत्रा, नरेन्द्र वलेचा, कै. अशोक गुलाटी, डा. विश्वप्रकाश त्रिपाठी, दिनेश त्यागी आदि ने पधार कर अपनी शुभकामनाये प्रदान की। समारोह के मुख्य अतिथि डा. रामदरश मिश्र रहे व अध्यक्षता डा. रमानाथ त्रिपाठी ने की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 20 आर्य युवकों ने श्री अरूण आर्य के नेतृत्व में सभी व्यवस्था कुशलता पूर्वक सम्भाली। डा. वरूणेन्द्र कथूरिया ने आभार व्यक्त किया।

डा. कथूरिया को युवा शक्ति ने दी बधाई व समाजसेवी प्रीति गोयल का अभिनन्दन

उल्लासमय वातावरण में डा. सुन्दरलाल कथूरिया को शुभकामनायें प्रदान करते हुए–डा.अनिल आर्य, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, योगेन्द्र शास्त्री, जगदीश गुलाटी, यशपाल आर्य, अरूण आर्य, माधवसिंह, वरूणेन्द्र कथूरिया, शिवम मिश्रा, वरूण आर्य, अमित आर्य, अभिषेक द्विवेदी, केशव आर्य, गौरव गुप्ता आदि। द्वितीय चित्र–श्रीमती प्रीति गोयल (धर्मपत्नि केन्द्रीय मन्त्री विजय गोयल) का अभिनन्दन करते परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य, दिनेश आर्य, शिशुपाल आर्य, अरूण आर्य, राकेश आर्य, अनुज आर्य, वरूण आर्य आदि।

ओड़िशा में युवक शिविर सम्पन्न व जम्मू के सुभाष बब्बर का अभिनन्दन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ओड़िशा के तत्वावधान में प्रान्तीय अध्यक्ष पं. धनेश्वर बेहरा के कुशल नेतृत्व में गुरूकुल वेदव्यास, राउरकेला में दिनांक 29 मई से 5 जून 2016 तक युवक चरित्र निर्माण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 50 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मुख्य अतिथि श्री शारदाप्रसाद नायक (अध्यक्ष, राहुरकेला विकास प्राधिकरण) ने उद्घाटन किया। पं. सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय, पं. नकुलदेव आर्य, डा. उमाकांत पण्डा, रामचन्द्र साहू (मंत्री, गुरूकुल प्रबन्ध समिति) ने प्रशिक्षण प्रदान किए। स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी ने युवकों को आशीर्वाद प्रदान कर शिविर का समापन किया। द्वितीय चित्र–परिषद् के जम्मू कश्मीर के प्रदेश अध्यक्ष सुभाष बब्बर, प्रान्तीय महामन्त्री रमेश खजुरिया व कोषाध्यक्ष मुकेश मैनी का अभिनन्दन करते राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य व स्वागताध्यक्ष मनोहरलाल बब्बर।

सेवक की आवश्यकता

आर्य समाज, प्रशान्त विहार, दिल्ली–110085 को एक सेवक की आवश्यकता है। इच्छुक सम्पर्क करें–

सोहनलाल मुखी, मन्त्री, फोनः 9811849523

आर्य समाज रोहिणी दिल्ली

आर्य समाज रोहिणी, सेक्टर–7, दिल्ली–110085 के चुनाव में श्री नरेश पाल आर्य– प्रधान, श्री संजीव गर्ग–मन्त्री, श्री देवराज आर्य–कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

युवा उद्घोष की ओर से हार्दिक बधाई।

– राजीव आर्य, मो. 9968079062

आर्यन महिला अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज के क्षेत्र में जो महिलाएं, संन्यासनी, उपदेशिका, भजनोपदेशिका के रूप में स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रही हैं अथवा जो कन्या गुरुकुलों में आचार्या हैं अथवा अध्यापन का कार्य कर रही हैं अथवा किसी भी रूप में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। संपूर्ण विवरण, कार्य क्षेत्र, आयु, शिक्षा आदि लिखकर भेंजे।

पता– सचिव ठाकुर, विक्रम सिंह ट्रस्ट

ए–41, लाजपत नगर, (द्वितीय)

(निकट मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली–110024

फोन–011–45791152, 29842527, 9599107207

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970